International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-12-2025, Accepted: 14-01-2026, Published: 29-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 469-471

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 जगदीश चन्द्र
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एस.एस.जे.राज0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय स्याल्दे, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

सारांश
मानव सभ्यता के इतिहास में शिक्षा की महती भूमिका रही है। शिक्षा समाज में ज्ञान के हस्तान्तरण के साथ समाज की नैतिक सॉस्कृतिक और बौद्धिक दिशा को तय करती है। शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है और समाज की सॉस्कृतिक चेतना का आधार होती है। भारत सॉस्कृतिक रूप से एक समृद्धशाली देश रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा की देश के विकास एवं सॉस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान प्रणालियों की एक विस्तृत और समृद्ध श्रृंखला समाहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, उपनिशद, दर्शन शास्त्र, अर्थ शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, का विशाल ज्ञानतत्व शामिल है। भारतीय ज्ञान परंपरा को और सही तरीके से समझने के लिए कुछ विचारों को समझना आवश्यक है यथा ! उपनिशद के अनुसार –''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात जो मुक्ति के योग्य बनाए वही विद्या है। महाभारत में कहा गया ''नास्ति विद्या सैम चक्षु'' अर्थात विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा से हम छात्रों में चरित्र का निर्माण करते हैं। भावी पीढ़ी का आत्मिक विकास करते हैं। समाज में उन्नति का कारण बनते है। भारतीय ज्ञान परंपरा सत्यनिष्ठता, विनम्रता, आत्मनिर्भरता, अनुशासन और परस्पर प्रेम पर बल देती है। पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणाली जहॉ एक ओर पारंपरिक ज्ञान प्रणाली लोक समाज की अनुभवजन्य समझ, प्रकृति के साथ सामंजस्य और नैतिकता दृष्टिकोण पर आधारित रही है वहीं दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकि दक्षता वैश्विक मानकों प्रतिस्पर्धी मानसिकता पर केन्द्रित रही है।
आधुनिक शिक्षा प्रणाली को औपनिवेशक प्रभाव की उपज माना जाता है। जिस का एक औपचारिक पाठ्यक्रम होता है, एक मूल्यॉकन प्रणाली होती है। इस में एक संस्थागत ढॉचा भी होता है। आधुनिक शिक्षा ने तकनीकी एवं व्यवसायिक दक्षता प्रदान की है। इस के साथ ही इस का एक प्रभाव यह भी रहा है कि इस से स्थानीय ज्ञान संस्कृति पारंपरिक मूल्य और जीवन दृष्टि हाशिये पर चली गई। प्रस्तुत शोध पत्र में हम भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली को समझने और उस की महत्वता पर प्रकाश डालेगा।

मुख्य शब्द: ज्ञान परंपरा, उपनिशद, दर्शन, वैदिक, गुरूकुल, तकनीकि, आत्मनिर्भरता, पाठ्यक्रम, मूल्य, बसुधैव, ज्ञानार्जन

भूमिका

भारत प्राचीन काल से उच्च मानवीय मूल्यों और और विशिष्ट ज्ञान परंपराओं का देश रहा है। भारत को संस्कृति एवं ज्ञान की दृष्टि से विश्व की प्राचीनतम सभ्यता माना जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों के रचनाकाल से मानी जाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में मानव जीवन, प्रकृति, और प्राकृतिक संसाधनों को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। भारतीय लिखित प्रमाणिक ज्ञान परंपरा का क्रम वेद, उपनिशद, संहिता, दर्शनशास्त्र से लेकर संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिंदी तक पहुॅचता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया। पुराणों में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की अलौकिक परंपरा समस्त जगत को आलोकित करने वाली है। पुराणों में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी आदि शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। यहॉ कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। ऋग्वेद के समय से ही भारतीय ज्ञान प्रणाली जीवन के आध्यात्मिक, भौतिक, नैतिक, और बौद्धिक मूल्यों पर केन्द्रित रही है। जिसमें सत्य अनुशासन, आत्मनिर्भरता, और विनम्रता जैसे मूल्यों पर जोर दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा ''अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतशाम् उदार चरितानां तु बसुधैव कुटुंबकम''[1] के सिद्धांत पर चलती है। इस के आधार पर कहा जाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा अपने और पराए में भेद नहीं करती और बसुधैव कुटुंबकम पर पूरा विश्वास करती है। इस के साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा सम्पूर्ण प्राणिजगत के सुख, समृद्धि एवं कल्याण की कामना करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का सूत्र वाक्य है –

''सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।''[2]

भारत एक देश ही नहीं बल्कि आदर्श ज्ञान व संस्कार की भूमि है। भारतीय ज्ञान परंपरा अक्षुण्ण है। इस परंपरा पर अनेक प्रहार हुए हैं फिर भी फिर भी यह विचलित नहीं हुई है। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सब से प्राचीन और बौद्धिक ज्ञान परंपराओं में से एक है। यह परंपरा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रही है बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलू को सही तरीके से जीने का माध्यम भी रही है। इस की जड़ें वैदिक साहित्य, गणित, दर्शन, चिकित्सा, नाटक, संगीत, और कला में गहराई से जुड़ी हुई हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का आरंभ वैदिक युग से होता है। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली गुरूकुल शिक्षा पद्वति पर आधारित थी जहॉ गुरू अपने शिष्यों को सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करते थे। यह ज्ञान केवल किताबी नहीं बल्कि व्यवहारिक और आध्यात्मिक भी होता था। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का महत्व ''सा विद्या या विमुक्तये''[3] का है। अर्थात ज्ञान वही है जो मुक्ति की ओर ले जाए।

भारतीय ज्ञान परंपरा को और अधिक विस्तार से समझने कि लिए कुछ और बातों पर प्रकाश डालना होगा।

1. **वेद, वेदांग और स्मृतियॉ:** भारतीय ज्ञान परंपरा का सब से मूल आधार वेद ही हैं। वेदों की संख्या चार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों को समझने की

सहायता के तौर पर वेदांगों की रचना की गई है। जिनकी संख्या छः है ये हैं ''शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरूक्त और ज्योतिश।''[4] व्याकरण शास्त्र में पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी को विश्व का प्रथम वैज्ञानिक व्याकरण ग्रंथ माना जाता है।

2. **दर्शन और तत्वज्ञान:** भारतीय दर्शन विश्व के अग्रणी दर्शनों में से एक है। भारतीय दर्शन के छः मुख्य तत्व है। सॉख्य, योग, न्याय, वैशेशिक, मीमॉसा और वेदॉत। इनमें आत्मा, ब्रह्म, जीवन और मोक्ष की अवधारणों पर विस्तार से चर्चा की गई है। न्याय और वैशेशिक दर्शन में तर्क और प्रमाणों के महत्व को स्वीकार किया गया है। वेदॉत दर्शन में आत्मा और ब्रह्म, की एकता पर बल दिया गया है।

3. **गणित, खगोलशास्त्र और चिकित्साशास्त्र:** गणित, खगोलशास्त्र और चिकित्साशास्त्र भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अनमोल निधि है। आर्यभट्ट ने शून्य, एवं पाई का अविष्कार किया उनका बीजगणित और त्रिकोणमिति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[5] आयुर्वेद एवं चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारतीय ज्ञान परंपरा अनूठी है। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक माना जाता है। ''शल्य क्रिया की बात की जाय तो सुश्रुत संहिता में 300 से अधिक शल्य क्रियाओं एवं और 120 से अधिक औजारों का वर्णन मिलता है।''[6] ज्योतिश और खगोलशास्त्र के अंतर्गत खगोलीय घटनाओं और ग्रहों की गति का विषेश अध्ययन किया गया है।

4. **कला साहित्य और सौन्दर्यशास्त्र:** भारतीय ज्ञान परंपरा में भरतमुनि का नाट्यशास्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो भारतीय नाट्यकला, संगीत और नृत्य का मूल आधार है। इसी ग्रंथ में रस सिद्धांत का भी प्रतिपादन किया गया है।

5. **शिक्षा प्रणाली:** प्राचीन शिक्षा प्रणाली गुरूकुल शिक्षा पद्वति पर आधारित थी। जिस में गुरू–शिष्य परंपरा का पालन किया जाता था। प्राचीनकाल से भारत में तक्षशिला, नालंदा, एवं विक्रमशिला, जैसे विश्वविद्यालयों में वैश्विक स्तर की शिक्षा दी जाती थी। जिनमें चिकित्सा, तर्कशास्त्र, व्याकरण, गणित, दर्शन और खगोलविद्या का गहन अध्ययन होता था। शिक्षा निःशुल्क होती थी हॉलाकि गुरू दक्षिणा का भी प्रावधान था। भारत के विश्वविद्यालयों में विश्व के विभिन्न भागों से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे।

अब आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर बात करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा अति प्राचीन और समृद्ध है। आज औपनिवेशिक प्रभाव के कारण भारत की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आया है। भारत पर मुगलों और अंग्रेजों का शासन रहा है। इस का प्रभाव भारतीय शिक्षा पद्यति पर भी पड़ा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का जहॉ तक सवाल है भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के साथ इस को जोड़ा जाता है। लार्ड मैकाले को भारत में आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है। जिस के खिलाफ आज भी कई बार विरोध के स्वर उठते रहे हैं। भारतीय आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव लार्ड मैकाले के ''मिनट ऑन इंडियन एजुकेशन''[7] से मानी जाती है। जिस में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पश्चिमी ज्ञान के प्रचार–प्रसार की वकालत की गई। 1835 की मैकाले शिक्षा पद्यति के बाद 1854 का वुड डिस्पैच आधुनिक शिक्षा प्रणाली की संरचना का आधार बना।[8] आधुनिक शिक्षा प्रणाली को और अधिक समावेशी और व्यापक बनाने हेतु समय–समय पर अनेक शिक्षा सुधार आयोगों का गठन किया गया।

1. **राधाकृश्णन आयोग, 4 नवंबर 1948:** राधाकृष्णन आयोग आजादी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में गठित होने वाला पहला आयोग था। इस को विश्वविद्यालयी शिक्षा आयोग के नाम से भी जाना गया। इस आयोग के अध्यक्ष डॉ0 सर्वपल्ली राधाकष्णन थे। इस आयोग का मुख्य उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालयी शिक्षा पर रिपोर्ट करना और देश की वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप उचित सुधार एवं विस्तार का सुझाव देना था। इस के अनुसार उच्च शिक्षा का उद्देश्य राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग, वाणिज्य में अपना योगदान दे सकने वाले महान व्यक्तित्वों का निर्माण व विकास करना है। साथ ही लोकतॉत्रिक मूल्यों का संरक्षण करना तथा व्यक्ति और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करना है।

2. **कोठारी आयोग, 1964–66:** इस को राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के नाम से भी जाना जाता है। इस आयोग के अध्यक्ष दौलत सिंह कोठारी थे। इस आयोग का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली की समीक्षा करना तथा शिक्षा के विकास के लिए सिफारिशें देना था।

कोठारी आयोग की प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार हैं।
क. मातृभाषा में शिक्षा।
ख. त्रिभाशा सूत्र।
ग. शिक्षा का एक समान पैटर्न।
घ. विज्ञान और गणित पर जोर।
ङ सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता।
च. कार्य अनुभव।
छ. सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास।
ज. आधुनिकीकरण और उत्पादकता में बृद्धि।

3. **नई शिक्षा नीति, 1986:** 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव थी। इस का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से समाज में समानता और न्याय स्थापित करना था। विषेश रूप से महिलाओं, आदिवासियों, एवं अनुसूचित जातियों के संबंध में। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रमुख बातें इस प्रकार है।

क. बाल केन्द्रित शिक्षा।
ख. समानता पर जोर
ग. महिला शिक्षा पर जोर
घ. अनुसूचित जातियों और जनजातियों की शिक्षा पर जोर।
ङ. शिक्षा में निवेश और उस के व्यवसायीकरण पर जोर।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की विषेशता है कि इसने शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और समानता के लिए व्यापक ढॉचा प्रदान किया, साथ की सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। आलोचकों का यह भी मानना है कि यह शिक्षा नीति शिक्षा के व्यवसायीकरण पर अधिक केन्द्रित रही इसने शिक्षा के समग्र विकास पर अधिक ध्यान नहीं दिया। कुछ लोगों का तो यहॉ तक मानना है कि यह शिक्षा नीति जमीनी स्तर पर वास्तविक परिवर्तन लाने पर विफल रही। ''नई शिक्षा नीति 1986 में यह प्रावधान भी किया गया कि नीति के विभिन्न पहलुओं के कार्यान्वयन की समीक्षा प्रत्येक पॉच वर्षों में अवश्य की जाएगी। कार्यान्वयन की प्रगति और समय–समय पर उभरती हुई प्रवृत्तियों की जॉच करने के लिए मध्यावधि मूल्यॉकन भी होंगे।''[9] इस शिक्षा नीति में 1992 में कुछ संशोधन भी किए गए।

4. **नई शिक्षा नीति, 2020:** NEP 2020 यह भारत सरकार के द्वारा 2020 में घोषित एक महत्वपूर्ण शिक्षा नीति है। इस का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की प्रणाली में व्यापक सुधार करना है। इस शिक्षा प्रणाली की मुख्य बातें इस प्रकार हैं।

- मातृभाषा/स्थानीय भाषा पर जोर।
- ब्लुविषयक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण।
- उच्च शिक्षा में सुधार।
- मूल्यॉकन प्रक्रिया में सुधार।
- शिक्षा में प्रौद्यौगिकी को बढ़ावा।
- 2030 तक 100ः नामॉकन।

नई शिक्षा नीति, 2020 में शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है। साथ की मानव संसाधन का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। ऑनलाइन एवं डिजिटल माध्यम से शिक्षा देने पर बात की गई है।
इस शिक्षा नीति की कुछ अन्य प्रमुख बातें इस प्रकार है।

क. नई शिक्षा नीति, 2020 के सिद्धांतों में कहा गया है कि ''शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है। जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करूणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पना शक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इस का उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोंगों को तैयार करना है जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित – समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करे।''[10]

ख. 5334 के नए डिजाईन में स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षण शास्त्र को पुनर्गठित करना नई शिक्षा नीति, 2020 में कहा गया है कि स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे को पुर्नगठित किया जाएगा ताकि 3–8, 8–11, 11–14 और 14–18 की उम्र के विभिन्न पड़ावों पर विद्यार्थियों के विकास की अलग–अलग अवस्थाओं के मुताबिक उनकी रूचियों और विकास की जरूरतों पर समुचित ध्यान दिया जा सके। इसलिए स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे तथा पाठ्यक्रम रूपरेखा एक 5334 डिजाइन से मार्गदर्शित होगी, जिसके तहत क्रमशः फाउंडेशनल स्टेज (दो भागों में अर्थात ऑगनवाड़ी/प्री–स्कूल के तीन साल प्राथमिक स्कूल में कक्षा 1–2 में 2 साल, 3 से 8 वर्ष के बच्चों सहित), प्रिपरेटरी स्टेज (कक्षा 3–5, 8 से 11 वर्ष के बच्चों सहित), मिडिल स्कूल स्टेज (कक्षा 6–8, 11 से 14 वर्ष के बच्चों सहित), सेकेंडरी स्टेज (कक्षा 9 से 12, दो फेज में, यानि पहले फेज में 9 और 10 तथा दूसरे फेज में 11 और 12, 14 से 18 वर्ष के बच्चों सहित) शामिल होगी। ''[11]

ग. उच्चतर शिक्षा उच्च्चतर शिक्षा के संबंध में नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य ऐसी उच्च्चतर शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ना है ''जिस में विशाल बहुविशयक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हों जिस से कि बहुविशयक स्नातक शिक्षा की ओर बढ़ा जा सके। इस के साथ ही विद्यार्थियों के अनुभव में वृद्धि के लिए पाठ्यचर्चा, शिक्षणशास्त्र, मूल्यॉकन और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सहयोग में आमलचूल परिवर्तन करना, शिक्षण, अनुसंधान और सेवा के आधार पर योग्यता–नियुक्तियों और करियर की प्रगति के माध्यम से संकाय और संस्थागत नेतृत्व की स्थिति की अखंडता की पुष्टि करना, व्यवसायिक (प्रोफेशनल) शिक्षा सहित उच्चतर शिक्षा के सभी एकल नियामक द्वारा लचीला लेकिन स्थायित्व प्रदान करने वाला विनियम, आदि।''[12]

इस के साथ ही नई शिक्षा नीति 2020 सीखने के लिए सर्वोत्तम वातावरण तैयार करना और छात्रों के सहयोग पर बल देती है। छात्रों की गतिविधियों और भागीदारी पर बल देती है। नवीन राष्ट्रीय अनुसंधान फाउण्डेशन के माध्यम से सभी क्षेत्रों में गुणवत्तायुक्त अकादमिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करती है। उच्चचर शिक्षा संस्थानों के लिए प्रभावी प्रशासन और नेतृत्व की बात करती है। व्यावसायिक शिक्षा पर जोर देती है। ''भारतीय भाशाओं, कला, और संस्कृति के संवर्धन पर बल देती है।''[13] शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर बल देती है। ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा का न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करती है। केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड के सशक्तिकरण पर बल देती है। ''सभी के लिए वहनीय और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए वित पोशण की बात करती है।''[14]

निष्कर्श

उपयुक्त अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि शिक्षा मानव सभ्यता के विकास की अनमोल कड़ी है। शिक्षा ही है जो मानव को अन्य प्राणियों से अलग करती है। भारत हमेशा से ही ज्ञान में अग्रणी रहा है। इस का कारण है भारतीय ज्ञान परंपरा जो विश्व की अग्रणी ज्ञान परंपरा रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा का श्रोत हमारे हमारे वेद, उपनिशद, वेदांग, आरण्यक तथा अन्य ग्रंथ हैं। जिस के कारण भारत हमेशा से ही ज्ञान का उत्पादक रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्म, नैतिकता, चरित्र निर्माण, गुरू–शिष्य परंपरा, गुरूकुल प्रणाली, वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था का पोशण करती है। इस के साथ ही आधुनिक शिक्षा प्रणाली, ज्ञान–विज्ञान, आधुनिकीकरण, तकनीकि का विकास, रोजगार सृजन, तथा समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर बल देती है। भारत के विकास के लिए आवश्यक है कि भारत को अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा के उजले पन्नों और आधुनिक शिक्षा प्रणली के उपयोगी अध्यायों को एक साथ जोड़ना होगा तभी भारत शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी देश बनेगा और विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

संदर्भ सूची

1. महाउपनिशद् अध्याय 6 लोक 71।
2. महाउपनिशद् अध्याय 6 लोक 72।
3. विष्णु पुराण – स्कन्ध –01 अध्याय–19, लोक सं0 41।
4. वाजसनेयी संहिता, 14.30।
5. आर्यभट् – अनुवाद के0 एस0 शुक्ला 1976।
6. सुश्रुत संहिता सुश्रुत संहिता– संपादक कुँजलाल भिशग्रत्न–1907।
7. Macaulay, Thomas. Minute on Indian education, 1835.
8. Wood's despatch, 1854. Ministry of education archive, government of India.
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986, भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग– भाग गप पृष्ठ सं0 16।
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार । भाग–एक (स्कूल शिक्षा) पृष्ठ संख्या 06।
11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार । भाग–एक (स्कूल शिक्षा) पृष्ठ संख्या 16।
12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार । भाग–एक पृष्ठ संख्या 54।
13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार । भाग–एक पृष्ठ संख्या 86।
14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार । भाग–एक पृष्ठ संख्या 99।